



SHRI SATHYANARAYANAN MUNDAYOOR

Shri Sathyanarayanan Mundayoor (Uncle Moosa) is the Founder-Coordinator of the Lohit Youth Library Network - a people's reading movement in Arunachal Pradesh. It is a model for non-formal education and community participation that can be replicated in any community. He has initiated several novel literary activities to promote the joy of reading and learning among the first-generation learners of the underprivileged tribal communities of Arunachal Pradesh. These have also been promoting use of Arunachali languages, most of which do not have a script.

2. Born on 7th March, 1952, Shri Mundayoor did Masters in Linguistics from Bombay University, Post-MA Diplomas in Adult & Continuing Education from Delhi University and Journalism from Bharatiya Vidya Bhavan, Mumbai. After a brief stint in LIC, he joined the Income Tax Department as a Revenue Officer in 1973. He resigned from his job in 1979 and joined Vivekananda Kendra, Kanyakumari, to become an education officer of the VKV residential schools in Arunachal Pradesh. During his tenure, he was instrumental in building up excellent school libraries and introducing several innovative learning activities.

3. Shri Mundayoor has done extensive research on non-formal education models all over the country like Mahila Samakhya, Lok Jumbish, Gandhian institutions, M.V. Foundation and Swadhyaya Movement. His "SWAYEM" programme in Etalin, a very remote village in upper Dibang valley was instrumental in initiating reading promotion and literacy among adolescents and adult women of Idu Mishmi tribe.

4. Shri Mundayoor ensured the participation of leading publishing houses like NBT India, CBT, Sri Ramakrishna Math, Eklavya, Tulika and Scholastic, as well as children's magazines and organizations like AWIC, in holding book exhibitions in remote villages, where no libraries exist and access to reading materials is negligible. The library Network enabled Tulika to bring out a children's book on Gandhiji in 5 Arunachal languages — Adi, Apatani, Mishmi, Nocte and Nyshi — and Bodo language of Assam, to mark the 150th year of Gandhiji's birthday celebrations in Arunachal Pradesh.

5. Shri Mundayoor is also the Academic Advisor of RIWATCH (Research Institute of World's Ancient Traditions Cultures and Heritage), Roing, a cultural research institute of Arunachal Pradesh that supports qualitative learning and research efforts of university students and links the work of academicians to benefit rural communities.

6. Shri Mundayoor is the recipient of many awards. In 2008, he received the Arunachal Pradesh Governor's Silver Medal, for meritorious services to the youth. In March 2007, he received the Roll of Honour from the Association of Writers & Illustrators for Children (AWIC), New Delhi, for outstanding reading promotion efforts among Himalayan communities. He has been inducted into the Civil Society Hall of Fame in November, 2016 and honoured with Lifetime Achievement Award from the Sree Narayana Guru Cultural Centre, Shillong. He was featured in the programme 'Amazing Indians' in Times Now in 2012. He has to his credit a Malayalam book of folktales and several articles on school education, reading habits and library movement.





श्री सत्यनारायणन् मुण्डयूर

श्री सत्यनारायणन् मुण्डयूर (अंकल मूसा), अरुणाचल प्रदेश के लोगों के एक रीडिंग मूवमेंट, लोहित यूथ लाइब्रेरी नेटवर्क के संस्थापक–कोआर्डिनेटर हैं। यह अनौपचारिक शिक्षा तथा सामुदायिक भागीदारी का एक मॉडल है, जिसे किसी भी समुदाय में अपनाया जा सकता है। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश के सुविधा वंचित जनजातीय समुदायों के प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के बीच पढ़ने और सीखने के आनन्द को प्राप्त करने के लिए कई अभिनव साहित्यिक गतिविधियां आरंभ की हैं। इससे अरुणाचली भाषाओं को भी प्रोत्साहन मिल रहा है, जिनमें से अधिकांश भाषाओं की कोई लिपि नहीं है।

2. श्री मुण्डयूर का जन्म 7 मार्च, 1952 को हुआ था। उन्होंने बंबई विश्वविद्यालय से भाषा विज्ञान में स्नातकोत्तर की उपाधि, दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रौढ़ और अनवरत शिक्षा में पोस्ट–एम.ए. डिप्लोमा तथा भारतीय विद्या भवन, मुंबई से पत्रकारिता का पाठ्यक्रम पूरा किया। भारतीय जीवन बीमा निगम में थोड़े समय तक कार्य करने के बाद, उन्होंने वर्ष 1973 में, आयकर विभाग में राजस्व अधिकारी के पद पर कार्य ग्रहण किया। वर्ष 1979 में उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी से जुड़ गये और अरुणाचल प्रदेश में वी.के.वी. के आवासीय स्कूलों में शिक्षा अधिकारी बन गए। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने उत्कृष्ट स्कूल पुस्तकालयों के निर्माण और कई अभिनव शिक्षण कार्य शुरू करने का कार्य किया।

3. श्री मुण्डयूर पूरे देश में महिला समाख्या, लोक जुम्बिश, गांधीवादी संस्थान, एम.वी. फाउन्डेशन तथा स्वाध्याय आंदोलन जैसे अनौपचारिक शिक्षा मॉडलों पर गहन शोध कार्य किया है। उनके "स्वयं" कार्यक्रम की, ऊपरी दिबांग घाटी में स्थित एक सर्वाधिक दूरस्थ गांव इटालिन के इदू मिश्मी जनजाति के किशोरों और प्रौढ़ महिलाओं के बीच पढ़ाई के प्रति रुचि पैदा करने तथा साक्षरता अभियान शुरू करने में बहुत अहम भूमिका रही है।

4. श्री मुण्डयूर उन सुदूर स्थित गांवों में, जहां कोई पुस्तकालय विद्यमान नहीं है और पठन–पाठन की सामग्री सुलभ होना मुश्किल है, पुस्तक प्रदर्शनियों के आयोजन में राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, सीबीटी, श्रीरामकृष्ण मठ, एकलव्य, तूलिका तथा स्कोलास्टिक जैसे अग्रणी प्रकाशन संस्थानों के साथ–साथ बच्चों की पत्रिकाओं और एडब्ल्यूआईसी जैसे संगठनों की भागीदारी सुनिश्चित की। अरुणाचल प्रदेश में गांधी जी के 150वीं जयंती समारोहों के आयोजन हेतु इस पुस्तकालय नेटवर्क ने गांधी जी पर बच्चों की पुस्तक 5 अरुणाचली भाषाओं अर्थात् अदि, अपातनी, मिश्मी, नॉक्टे और नाइशी भाषाओं में प्रकाशित करने में तूलिका की मदद की।

5. श्री मुण्डयूर, विश्व की प्राचीन परंपराओं, संस्कृतियों और विरासत के शोध संस्थान, रुइंग के शैक्षिक सलाहकार हैं। यह संस्थान अरुणाचल प्रदेश का एक सांस्कृतिक शोध संस्थान है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षण और शोध के प्रयासों में विश्वविद्यालय के छात्रों की मदद करता है और ग्रामीण समुदायों के लाभ हेतु शिक्षाविदों के कार्यों को संयोजन प्रदान करता है।

6. श्री मुण्डयूर को अनेक पुरस्कार प्रदान किए गए हैं। वर्ष 2008 में उन्हें युवाओं को उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान करने के लिए अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल का रजत पदक प्राप्त हुआ। मार्च, 2007 में उन्हें हिमालयी समुदायों के बीच उत्कृष्ट पठन–पाठन को प्रोत्साहित करने के प्रयासों के लिए एसोसिएशन ऑफ राइटर्स एंड इलुस्ट्रेटर्स फॉर चिल्ड्रेन (ईडब्ल्यूआइसी), नई दिल्ली से रोल ऑफ ऑनर सम्मान प्राप्त हुआ। उन्हें नवम्बर, 2016 में सिविल सोसायटी हॉल ऑफ फेम में शामिल किया गया है तथा श्री नारायण गुरु सांस्कृतिक केन्द्र, शिलांग से लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। उन्हें वर्ष 2012 में टाइम्स नाऊ के 'अमेजिंग इंडियंस' कार्यक्रम में प्रमुख स्थान दिया गया था। उन्होंने मलयालम लोककथाओं से संबन्धित एक पुस्तक लिखी है और स्कूली शिक्षा, पढ़ने की आदतों और पुस्तकालय अभियान पर कई लेख लिखे हैं।